

Fonts for Itranslator 99

Sanskrit 99 – Gudakesa 99 – Santipur 99

Sanskrit 99 – Character Map and Typesetting Specimens	2
Gudakesa 99 – Character Map and Typesetting Specimens	3
Gudakesa 99 – Remarks by the Designer L.S. Tikhomirov	4
Gudakesa 99 – Sample from Brockhaus: „Katha Sarit Sagara“, 1839	5
Santipur 99 – Character Map and Typesetting Specimens	6
Santipur 99 – Remarks by the Designer L.S. Tikhomirov	7
Santipur 99 – Sample from Stenzler: „Elementarbuch“, 1868	8
Quotation from Faulmann: „Das Buch der Schrift“, 1880	9
Quotation from Glaister: „Glossary of the Book“, 1979	13
Quotation from Geßner: „Buchdruckerkunst“, 1743	15
Quotation from Wilkins: „Grammar of the Sanskrita Language“, 1808	17

The only Devanagari font so far for Itranslator 99 was our font *Sanskrit 99*, see below page 2.

I am grateful to Mr. Lev Tikhomirov for designing *two* additional fonts for Itranslator 99, *firstly* the historical font *Gudakesa 99* being a replica of the anonymous font used by Bopp and Schlegel for the first Sanskrit editions printed in Europe (for historical details see the quotations from Glaister’s „Glossary of the Book“) and used by Böhthlingk for his Petersburg dictionaries, and *secondly* the historical font *Santipur 99* being a replica of a later and also anonymous font used in Germany (Leipzig, etc.) for typesetting Stenzler’s Elementarbuch and Cappeller’s Wörterbuch and many other books published since the middle of the 19th century, and in Great-Britain e.g. the Sanskrit Grammar and Sanskrit Dictionary by A.A.MacDonell.

It was a pleasure for me to fund this font project by Lev Tikhomirov, and I trust that users of Itranslator 99 will be pleased to now have a choice among three different Devanagari fonts.

Ulrich Stiehl, Heidelberg, 20-September-2005

<http://www.sanskritweb.net>

Sanskrit 99

	0	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15
032		ॠ	ॡ	ॢ	ॣ	।	॥	०	१	२	३	४	५	६	७	८
048	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	०	१	२	३	४	५
064	ए	अ	ब	च	छ	ॠ	ॡ	ॢ	ॣ	।	॥	०	१	२	३	४
080	८	९	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	०	१	२	३
096	ॐ	ॠ	ॡ	ॢ	ॣ	।	॥	०	१	२	३	४	५	६	७	८
112	प	ट	र	स	त	॥	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९
128					ॠ	ॡ	ॢ	ॣ	।	॥	०	१	२	३	४	५
144		ॠ	ॡ	ॢ	ॣ	।	॥	०	१	२	३	४	५	६	७	८
160		ॠ	ॡ	ॢ	ॣ	।	॥	०	१	२	३	४	५	६	७	८
176	ॠ	ॡ	ॢ	ॣ	।	॥	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९
192	ॠ	ॡ	ॢ	ॣ	।	॥	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९
208	ॠ	ॡ	ॢ	ॣ	।	॥	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९
224	ॠ	ॡ	ॢ	ॣ	।	॥	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९
240	ॠ	ॡ	ॢ	ॣ	।	॥	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९

12 point prose sample and 16 point verse sample:

अस्ति भागीरथीतीरे गृध्रकूटनाम्नि पवते महान्पर्कटीवृक्षः। तस्य कोटरे दैवदुर्विपाकाद्गलितनखनयनो जरद्रवो नाम गृध्रः प्रतिवसति। तज्जीवनाय तद्दृक्षवासिनः पक्षिणः स्वाहारात्किञ्चित्किञ्चिद्दति। तेनासौ जीवति। शावकानां रक्षणं करोति। अथ कदाचिदीर्घकर्णो नाम मार्जारः पक्षिश्रावकान्भक्षयितुमागतः। तत्तमायान्तं दृष्ट्वा शावकैर्भयाकुलैर्महान्कोलाहलः कृतः। तच्छ्रुत्वा जरद्रवेनोक्तम्। कोऽयमायाति। दीर्घकर्णो गृध्रमवलोक्य सभयं हा हतोऽस्मि। अधुनातिसंनिधाने पलायितुमक्षमः। तद्यथा प्राप्तव्यं तद्भवतु। एतत्समीपमुपगच्छामि। इत्यालोच्योपसृत्याब्रवीत्। आर्य त्वामभिवन्दे। गृध्रो ब्रूते। कस्त्वम्। सोऽब्रवीत्। मार्जारोऽहम्। तदपसर। नो चेद्धन्तव्योऽसि मया। मार्जारोऽवदत्। श्रूयतां तावन्मम वचनम्। ततो यद्यहं वध्यस्तदा हन्तव्यः।

आसीद्राजा नलो नाम वीरसेनसुतो बली।

उपपन्नो गुणैरिष्टै रूपवानश्वकोविदः ॥३-५०-१॥

अतिष्ठन्मनुजेन्द्राणां मूर्ध्नि देवपतिर्यथा।

उपर्युपरि सर्वेषामादित्य इव तेजसा ॥३-५०-२॥

Gudakesa 99

	0	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15
032		ॐ	घ	ङ	ई	उ	ॐ	ड	य	फ	द्य	ॐ	।	-	॥	
048	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	०	ष	.	५	:	
064	ए	अ	ब	च	ह	ॐ	ठ	ग	क	ी	उ	क	ल	म	न	ख
080	ट	ठ	ॐ	फ	त	ॐ	ठ	ट	६	ट	श	ण	ऋ	ॠ	उ	२
096	ऊँ	।	ब	च	द	ॐ	उ	ग	ह	ि	न	क	ल	म	न	ख
112	प	ट	र	स	त	ॐ	व	थ	ध	य	श	ण	ज	ज्ञ	ॐ	
128	ी				क	ॐ	द	ॐ	.		क	क	ॠ		ी	
144		ल	ॠ	ॡ	ॢ	ॣ	.	.	द्व	द्य					.	ह
160		ॐ	य	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	-	त	
176		क	क	क	क	ख	ग	.	६	घ	घ	ङ	ङ	च	ज	ब्र
192	ॐ	उ	च	ज	त	त	न	त्र	३	भ	ड	रू	रू	रू	रू	रू
208	रू	रू	रू	रू	रू	रू	रू	रू	रू	रू	रू	रू	रू	रू	रू	रू
224	प्र	फ	ब्र	ब्र	ब्र	भ्र	भ्र	भ्र	भ्र	रू	रू	ब्र	व्र	श्र	श्र	श्र
240	श्र	श्र	ष्ट	ष्ट	स्त्र	स्त्र	स्त्र	रू	रू	रू	रू	रू	रू	रू	रू	रू

12 point prose sample and 16 point verse sample:

अस्ति भागीरथीतीरे गृध्रकूटनामि पर्वते महान्पर्कटीवृक्षः। तस्य कोटरे दैवदुर्विपाकाद्गलितनखनयनो जरद्वो नाम गृध्रः प्रतिवसति। तज्जीवनाय तद्दक्षवासिनः पक्षिणः स्वाह्वारत्किञ्चित्किञ्चिद्दति। तेनासौ जीवति। शावकानां रक्षणं करोति। अथ कदाचिदीर्घकर्णो नाम मार्जारः पक्षिशावकान्भक्षयितुमागतः। तत्तमायान्तं दृष्ट्वा शावकैर्भयाकुलैर्महान्कोलाहलः कृतः। तच्छ्रुत्वा जरद्वेनोक्तम्। कोऽयमायाति। दीर्घकर्णो गृध्रमवलोक्य सभयं ह्यहो हतोऽस्मि। अधुनातिसंनिधाने पलायितुमक्षमः। तद्यथा प्राप्तव्यं तद्भवतु। एतत्समीपमुपगच्छामि। इत्यालोच्योपसृत्याब्रवीत्। आर्य त्वामभिवन्दे। गृध्रो ब्रूते। कस्त्वम्। सोऽब्रवीत्। मार्जारोऽहम्। तदपसर। नो चेद्वन्तव्योऽसि मया। मार्जारोऽवदत्। श्रूयतां तावन्मम वचनम्। ततो यद्यहं वध्यस्तदा हन्तव्यः।

आसीद्राजा नलो नाम वीरसेनसुतो बली।

उपपन्नो गुणैरिष्टै रूपावानश्चकोविदः ॥ ३-५०-१ ॥

अतिष्ठन्मनुजेन्द्राणां मूर्ध्नि देवपतिर्यथा।

उपर्युपरि सर्वेषामादित्य इव तेजसा ॥ ३-५०-२ ॥

ABOUT SANSKRIT FONT "GUDAKESA 99"

HISTORY OF TYPEFACE

From book "Glaister's Glossary of book" by Geoffrey Ashall Glaister.
(second edition, London 1979)

In France, following acquisition of Pons collection of Sanskrit MSS in 1729, Royal Library in Paris became Europe's main centre of Sanskrit studies. It was here, in 1820, that August Wilhelm von Schlegel, professor of Sanskrit at Bonn Academia Rhenana, commissioned fount of nagari type. The result was Vibert's excellent 20-point size of 1821, first shown in pamphlet "Specimen novae typographiae Indicae ... litterarum figuras ad elegantissimum codicum Bibliothecae Regiae Parisiensis exemplaria delineavit ... Aug. Guil. Schlegel ... Lutetiae Parisiorum ex officina Georgii Crapelet, MDCCCXXI". Vibert cut punches and J-B Lion Lettern cast type. Schlegel gave Europe first nagari type to remain in use until present day, personally setting type for his edition of "Bhagavad-gita", Bonn, 1823. In 1825 Delafond of Paris cut a 16-point size.

At Bopp's instigation "Akademie der Wissenschaft" in Berlin acquired Schlegel's matrices and equipment for its newly established oriental printing office in 1821. Here Bopp supervised cutting of smaller fount of nagari to be used for textual notes. They were used in Bopp's edition of "Ardschuna's Reise zu Indra's Himmel ...", Berlin, 1824. In 1825 "Societe Asiatique" in Paris bought Schlegel and Bopp founts, using them in Antonie Chezy's Sanskrit/French edition of "Sakuntala", Doney-Dupre, 1830. By mid-century the founts were acquired by Brill of Leyden who issued a specimen "De Sanskrit Drukletters" in 1851. Thus Schlegel's type spread through Europe. The Vibert and Delafond punches are now in "Cabinet des Pincons", q.v.

ENCODING

In general font follows mapping of "Sanskrit 99" font and can be used with "Itranslator 99" program with several corrections and additions.

Corrections: hla (0146), hNa (0159), hma (0252), hva (0254), hra (0255) are better used with down-matras for ligatures -- u (0130), U (0131), R^i (0175) -- then with simple down-matras; dga (0204), dgra (0205), dda (0206), ddha (0207), dna (0208), dbha (0209), dba (0211), dra (0212), dva (0214) are better used with simple down-matras -- u, U, R^i (&) -- then with down-matras for ligatures.

Additions: separate letters o-kara (0128) and au-kara (0142); line extender (0158), sometimes can be manually inserted to avoid flaping of upper matras.

LICENSE

You can use font as you like. But you can't modify font or make other font including characters from this font. If you want to distribute by internet you have to ask me by e-mail.

lila123@newmail.ru (Tikhomirov L.S. aka Lila-P das)

Special thanks to Marcis Gasuns (gasyoun@yandex.ru) for getting me necessary books.

TARANGA. 1.

श्रियं दिशतु वः शम्भोः श्यामः कण्ठो मनोभुवा
अङ्कस्थपार्वतीदृष्टिपाशैरु इव विवेष्टितः । 1
सन्धानृत्योत्सवे ताराः करेण उडूय विघ्नजित्
शीत्कारशीकरैरु अन्याः कल्पयन् इव पातु वः । 2
प्रणम्य वाचं निःशेषपदार्थोद्द्योतदीपिकां
वृहत्कथायाः सारस्य संग्रहं रचयाम्यु अहं । 3
आद्यम् अत्र कथापीठं, कथामुखम् अतःपरं,
ततो लावाणको नाम तृतीयो लम्बको भवेत् । 4
नरवाहनदत्तस्य जननं च, ततः परं
स्याच् चतुर्दारिकाख्यश् च, ततो मदनमञ्जुका । 5
ततो रत्नप्रभा नाम लम्बकः सप्तमो भवेत्,
सूर्यप्रभाभिधानश् च लम्बकः स्याद् अथ 'अष्टमः । 6
अलङ्कारवती च 'अथ, ततः शक्तियशा भवेत्,
विलालम्बकसंज्ञश् च भवेद् एकादशस् ततः । 7

1*

Santipur 99

	0	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15
032		ॐ	घ	ङ	ई	उ	ॐ	ङ	य	फ	द्य	ॐ	।	-	॥	
048	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	०	१	२	३	४	५
064	ए	अ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
080	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
096	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
112	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
128	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
144	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
160	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
176	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
192	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
208	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
224	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
240	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ

12 point prose sample and 16 point verse sample:

अस्ति भागीरथीतीरे गृध्रकूटनाम्नि पर्वते महान्पर्कटीवृक्षः। तस्य कोटरे दैवदुर्विपाकाद्गलितनखनयनो जरद्रवो नाम गृध्रः प्रतिवसति। तज्जीवनाय तद्गृध्रवासिनः पक्षिणः स्वाहारात्किञ्चिद्विद्विद्दति। तेनासौ जीवति। शावकानां रक्षणं करोति। अथ कदाचिद्दीर्घकर्णो नाम मार्जारः पक्षिशावकान्भक्षयितुमागतः। तत्तमायान्तं दृष्ट्वा शावकैर्भयाकुलैर्महान्कोलाहलः कृतः। तच्छ्रुत्वा जरद्रवेनोक्तम्। कोऽयमायाति। दीर्घकर्णो गृध्रमवलोक्य सभयं हा हतोऽस्मि। अधुनातिसंनिधाने पलायितुमक्षमः। तद्यथा प्राप्तव्यं तद्भवतु। एतत्समीपमुपगच्छामि। इत्यालोच्योपसृत्याब्रवीत्। आर्य त्वामभिवन्दे। गृध्रो ब्रूते। कस्त्वम्। सोऽब्रवीत्। मार्जारोऽहम्। तदपसर। नो चेद्दन्तव्योऽसि मया। मार्जारोऽवदत्। श्रूयतां तावन्मम वचनम्। ततो यद्यहं वध्यस्तदा हन्तव्यः।

आसीद्राजा नलो नाम वीरसेनसुतो बली।
 उपपन्नो गुणैरिष्टै रूपवानश्चकोविदः॥३-५०-१॥
 अतिष्ठन्मनुजेन्द्राणां मूर्ध्नि देवपतिर्यथा।
 उपर्युपरि सर्वेषामादित्य इव तेजसा॥३-५०-२॥

ABOUT SANSKRIT FONT "SANTIPUR 99"

HISTORY OF TYPEFACE

(history is not completely known; most of books were printed in Germany; in one of books we can find following)

(Harvard Oriental Series. vol.14 The Pancatantra. Charles Rockwell Lanman, Cambridge Oriental Series, printed from type in 1913 at the Oriental Printing Office of G.Kreysing, Leipzig, Saxony, Germany.)

"Preface.

...

Acknowledgement. To the printing-house of G.Kreysing of Leipzig a public acknowledgements of thanks is due. Dr.Hartel gave me ther welcome assurance that the compositor and proof-reader did their work so well as to save him a great deal of trouble. And the general appearance of the text called forth from him expressions of satisfaction and delight. The larger Sanskrit type of this volume was brand-new when the work was begun, and it certainly yeilds a clear cut and beautiful result. Scholars may well be gratefull to good master-printers, and I will for this printing-house, now in the second century of its hitory, a long continuance of its useful and honorable activity."

ENCODING

In general font follows mapping of "Sanskrit 99" font and can be used with "Itranslator 99" program with several corrections and additions.

Corrections: hla (0146), hNa (0159), hna (0251), hma (252), hya (253), hva (0254), hra (0255) are better used with down-matras for ligatures -- u (0130), U (0131), Rⁱ (0175) -- then with simple down-matras.

Additions: variant of z (0128); variant of small reph (142), line extender (0158), sometimes can be manually inserted to avoid flaping of upper matras.

LICENSE

You can use font as you like. But you can't modify font or make other font including characters from this font. If you want to distribute by internet you have to ask me by e-mail.

lila123@newmail.ru (Tikhomirov L.S. aka Lila-P das)

Special thanks to Marcis Gasuns (gasyoun@yandex.ru) for getting me necessary books.

I. Mahābhārata 3, 122, 1—125, 11¹).

॥ लोमश उवाच ॥

भृगोर्महर्षेः पुत्रो ऽभूच्च्यवनो नाम भारत ।
समीपे सरसस्त्वस्य तपस्तेपे महाद्युतिः ॥ १ ॥
स्थाणुभूतो²) महातेजा वीरस्थानेन पाण्डव ।
अतिष्ठत चिरं कालमेकदेशे विशां पते ॥ २ ॥
स वल्मीको ऽभवदृषिलताभिरिव संवृतः ।
कालेन महता राजन्समाकीर्णः पिपीलिकैः ॥ ३ ॥
तथा स संवृतो धीमान्मृत्पिण्ड इव सर्वशः ।
तप्यते स्म तपो घोरं वल्मीकेन समावृतः ॥ ४ ॥
अथ दीर्घस्य कालस्य शर्यातिर्नाम पार्थिवः ।
आजगाम सरो रम्यं विहर्तुमिदमुत्तमम् ॥ ५ ॥
तस्य स्त्रीणां सहस्राणि चत्वार्यासन्परिग्रहः ।
एकैव च सुता सुभ्रूः सुकन्या नाम भारत ॥ ६ ॥
सा सखीभिः परिवृता दिव्याभरणभूषिता ।
चक्रम्यमाणा वल्मीकं भार्गवस्य समासदत् ॥ ७ ॥
सा वै वसुमतीं तत्र पश्यन्ती सुमनोरमाम् ।
वनस्पतीन्विचिन्वन्ती³) विजहार सखीवृता ॥ ८ ॥
रूपेण वयसा चैव मदनेन मदेन च ।
बभञ्ज वनवृक्षाणां शाखाः परमपुष्पिताः ॥ ९ ॥
तां सखीरहितामेकामेकवस्त्रामलंकृताम् ।
ददर्श भार्गवो धीमांश्चरन्तीमिव विद्युतम् ॥ १० ॥

*Adolf Friedrich Stenzler, Elementarbuch der Sanskritsprache, München 1902, Seite 57
(The first edition was published in 1868)*

DEVANAGARI.

(Ältere Druckschrift nach A. W. v. SCHLEGEL.)

Zeichen	Wert	Zeichen	Wert	Zeichen	Wert	Zeichen	Wert	Zeichen	Wert	Zeichen	Wert
अ	a	इ	i	ग	a	ठ	ṭa	ध	dha	र	ra
आ	ā	ई	ī	घ	ha	ठ	ṭha	न	na	ल	la
इ	i	ए	e	ङ	ṅa	ड	ḍa	प	pa	ळ	ḷa
ई	ī	ऐ	ai	च	tśa	ढ	ḍha	फ	pha	व	va
उ	u	ओ	o	छ	tśha	ण	ṇa	ब	ba	स	sa
ऊ	ū	औ	au	ज	džā	त	ta	भ	bha	श	śa
ऋ	ṛ	क	ka	झ	džha	थ	tha	म	ma	ष	śa
ॠ	ṝ	ख	kha	ञ	ña	द	da	य	ya	ह	ha

Ligaturen.

क	k-	ख	khva	च	tśtśa	ट	ṭśa	त्र	tra	ड	ḍbra
क	kka	ग	g-	च	tśña	ड	ṭśa	व	tva	ड	ḍbha
क	kta	ङ	gn-	च	tśra	थ	ṭhma	थ	th-	ड	ḍbhya
क	ktya	ग	gna	च	tśva	थ	ṭhya	ड	du	ड	ḍbhra
क	ktra	ङ	gr-	छ	tśhma	ड	ḍḍa	ड	dū	ड	ḍma
क	ktva	ग	gra	छ	tśhya	ड	ḍḍha	ड	ḍḍ	ड	ḍya
क	kna	घ	gh-	छ	tśhra	ड	ḍbha	ड	dga	ड	ḍra
क	knya	घ	ghna	छ	tśhva	ड	ḍya	ड	dgya	ड	ḍrya
क	kma	घ	ghra	ङ	dž-	ड	ḍhṇa	ड	dgra	ड	ḍva
क	kya	घ	ghla	ञ	džna	ड	ḍhma	ड	dgha	ड	ḍvya
क	kra	ङ	ṅka	ञ	džra	ड	ḍhya	ड	dghra	ड	ḍvra
क	krya	ङ	ṅkśa	त	ña-	ण	ṇ-	ड	dda	ड	ḍh-
क	kla	ङ	ṅkha	च	ñtśa	ण	ṇṇa	ड	ddra	ड	ḍhna
क	kva	ङ	ṅga	ञ	ñdžā	त	t-	ड	ddva	ड	ḍhra
क	kś-	ङ	ṅgha	ञ	ñña	त	tta	ड	ddha	ड	ḍhva
क	kśa	ङ	ṅña	ड	ṭśa	ल	ttra	ड	ddhna	ड	ḍn-
क	kh-	ङ	ṅma	ड	ṭpa	व	ttva	ड	ddhya	ड	ḍnt-
क	khna	ङ	ṅnya	ल	ṭma	ल	tn-	ड	dna	ड	ḍnta
क	khra	ङ	tś-	ल	ṭya	ल	tna	ड	dba	ड	ḍntr-

DEVANAGARI.

Zeichen	Wert	Zeichen	Wert	Zeichen	Wert	Zeichen	Wert	Zeichen	Wert	Zeichen	Wert
त्र	ntra	प्र	pvyā	म्व	mva	श्च	śtṣa	स	s-	ह्न	hna
त्र्य	ntrya	फ	ph-	ट	y-	श्च	śna	स्न	sna	ह्न	hma
त्रव	ntva	फम	phma	रू	r-	श्च	śra	स्त्र	stra	ह्य	hya
त्रन्	nna	फय	phya	रु	ru	श्च	śla	स्त्र	sr-	ह्र	hra
त्रन	nra	ठ	b-	रु	rū	श्च	śva	स्त्र	sra	ह्र्य	hrya
ट	p-	ब्र	bra	ल	l-	ट	ṣ-	स्ल	sla	ह्ल	hla
टफ	pt-	भ	bh-	श्च	hna	ट	ṣṭa	स्व	sva	ह्व	hva
टम	pta	भ्र	bhra	श्च	lla	ट्या	ṣṭya	हु	hu	ह्य	hvyā
टप्र	pna	म	m-	ठ	v-	ट	ṣṭha	हू	hū		
टप्र	pra	म्व	mna	व्र	vra	ट्या	ṣṭhya	हृ	hṛ		
टप्र	pla	म्व	mra	व्र	vla	श्च	śṇa	हृ	hṛ		
टप्र	pva	म्व	mva	श्च	ś-	श्च	śva	हृ	hṛ		

Zahlzeichen: १ 1, २ 2, ३ 3, ४ 4, ५ 5, ६ 6, ७ 7, ८ 8, ९ 9, ० 0.

Die *Devanagari* oder die Schrift der Götterstadt (*Benares* oder *Varanasi*) ist die Schrift der heiligen Bücher der Brahmanen, somit die Schrift der Religions- und der Rechtssprache, auf welche in lautlicher wie auch in schönheitlicher Beziehung die genaueste Sorgfalt verwendet wurde. In ihr ist das Prinzip der indischen Vokalbezeichnung und der Konsonantenverbindung allein zur höchsten Vollkommenheit gelangt.

Die Entstehung der *Devanagari*-Schrift lässt sich an den vorangehenden Alphabeten ganz genau verfolgen. Als die vollkommenste Schrift Indiens hat sie später auf andere Schriften als Muster eingewirkt und ist Ursache zur Vermehrung der Zeichen dieser Schriften geworden. Mit ihr werden geschrieben:

Sanskrit, die heilige Sprache der Brahmanen, *Hindi*, die Sprache vom Centrum Nord-Indiens, die fast in ganz Indien verstanden wird, und die Sprache von *Sindh*, wo sie neben der älteren unvollkommeneren Schrift angewendet wird.

Die Aussprache der Palatalgruppe soll früher *k', g', k', g'* gewesen sein, doch werden diese Zeichen gegenwärtig wie *tš, dž, tšh, džh* gelesen. Nachdem mit der mohammedanischen Religion arabische und persische Wörter nach Indien eingedrungen waren, wurden einige Devanagarizeichen mit Punkten versehen, um die fremden Laute dieser Sprachen ausdrücken zu können. Diese fremden Zeichen, sowie die Vokalverbindungen sind auf S. 134 aufgeführt.

DEVANAGARI.

Neuere Druckschrift nach alten Handschriften.

Zeichen	Wert	Zeichen	Wert	Zeichen	Wert	Zeichen	Wert	Zeichen	Wert	Zeichen	Wert
अ	a	ल	l	ग	ga	ट	ṭa	ध	dha	र	ra
आ	ā	ळ	ḷ	घ	gha	ठ	ṭha	न	na	लल	la
इ	i	ए	e	ङ	ṅa	ड	ḍa	प	pa	ळ	ḷa
ई	ī	ऐ	ai	च	čša	ढ	ḍha	फ	pha	व	va
उ	u	ओ	o	छ	čšha	ण	ṇa	ब	ba	स	sa
ऊ	ū	औ	au	ज	dža	त	ta	भ	bha	श्र	ša
ऋ	ṛ	क	ka	झ	džha	थ	tha	म	ma	ष	ša
ॠ	ṝ	ख	kha	ञ	ña	द	da	य	ya	ह	ha

Ligaturen.

क	k-	क्ष	kša	घ्य	ghya	झ	dždžha	ह्र	ḥra	त्र	ttra
क्क	kka	क्ष्म	kšma	घ्र	ghra	झ	džń-	ए	ṇ-	तन	tna
क्त	kta	क्ष्य	kšya	ङ्क	ṅkha	ञ	džńa	राट	ṇṭa	तम	tma
क्त्वा	ktva	क्ष्वा	kšva	ङ्ग	ṅga	ज्य	džya	राठ	ṇṭha	तय	tmya
क्थ	ktha	ख	kh-	ङ्घ	ṅgha	ज्र	džra	राड	ṇḍa	त्य	tya
क्क	kna	ख्य	khya	ङ्घ्र	ṅghra	ज्व	džva	राढ	ṇḍha	त्र	tra
क्म	kma	ग	g-	र	tš-	रु	džha	स	ṇa	च	trya
क्य	kya	ग्य	gnya	र	tštša	उ	ń-	राय	ṇya	त्र	tva
क्र	kra	ग्र	gra	र	tštšha	ज्व	ńtša	राव	ṇva	त्स	tsa
क्क	kra	ग्र्य	grya	र्य	tšma	ञ	ńdža	र	t-	त्स	tsna
क्क	kla	र	gh-	र	tšhra	रु	ṭṭa	क	tka	त्स्य	tsya
क्क	kva	म	ghna	र	dž-	रु	ṭhya	त्र	tta	र	th-
रु	kš-	र्य	ghma	र	dždža	रु	ṭhra	त्य	ttya	थ्य	thya

DEVANĀGARĪ. LIGATUREN.

Zeichen	Wert	Zeichen	Wert	Zeichen	Wert	Zeichen	Wert	Zeichen	Wert	Zeichen	Wert
द	ḍr	ध	dhva	घ	pva	म	mya	श्	ṣṭša	स्	stra
दग	dga	न	n-	स	psa	म्र	mra	श्च	ṣṭṣya	स्थ	stha
दघ	dgha	न्	nta	ब	b-	मस	msa	श्न	ṣṇa	स्न	sna
दद	dda	न्त्र	ntra	बघ	bgha	र	y-	श्र	ṣra	स्म	spa
ददघ	ddha	न्द्र	nda	बज	bdža	य	ya	श्ल	ṣla	स्फ	spha
ददघ्य	ddhya	न्द्रा	ndra	बृ	bṛa	य्य	yya	श्व	ṣva	स्म्य	smya
दना	dna	न्ध	ndha	ब्ध	bdha	रु	ru	श्श	ṣṣa	स्य	syā
दबा	dba	न्म	nma	ब्ब	bba	रु	rū	ः	ḥ-	स्र	sra
दबघ	dbha	न्म	nma	ब्भ	bbha	रु	l-	ः	ṣṭa	स्व	sva
दबघ्य	dbhya	न्य	nya	ब्र	bra	ल्	lḥa	श्च्य	ṣṭhya	ह	h-
दमा	dma	न्	nra	भ	bh-	ल्य	lpa	श्च्य	ṣṭya	हृ	hṛ
दया	dya	न्स	nsa	भ्	bhna	ल्य	lma	श्च	ṣṭra	हृन्	hṛa
द्रा	dra	प	p-	भ्य	bhya	ल्य	lya	श्च्य	ṣṭrya	ह्य	hya
दवा	dva	प्	pta	भ्र	bhra	ल्य	lla	श्च	ṣṭva	ह्य	hya
दवघ	dvya	प्	pna	म	m-	ल्य	lva	श्च	ṣṭha	ह्य	hya
दध	dh-	प्प	ppa	मन्	mna	व	v-	श्न	ṣṇa	ह्य	hya
दधघ	dhna	प्म	pma	म्	mpa	व्य	vya	श्म	ṣma	ह्य	hya
दधघ्य	dhma	प्य	pya	म्प	mpra	व्र	vra	श्च	ṣya	ह्य	hya
दध्या	dhya	प्र	pra	म्व	mva	व्व	vva	ः	s-		
दध्रा	dhra	प्ल	pla	म्भ	mbha	श्	ṣ-	स्व	skha		

Vokalverbindung:

का k̄a, कि ki, की kī, कु ku, कू k̄ū, कृ kṛ, कृ kṛ, कृ kṛ, कृ kṛ, कृ kṛ, के ke, कै kai,
 को ko, कौ kau, कं k̄ā, कँ k̄ā, कः kaḥ, क+ kaḥ, कृ kaḥ, कृ kaḥ, कृ kaḥ, कृ kaḥ, कृ kaḥ.

Fremde Zeichen:

अ a, ह h̄a, क qa, ख ḥa, ग ḡa, स ḍa, ञ za, त ḍa, ज ḍa, फ fa, अ̄ ā, इ̄ i.

Zahlzeichen:

१ 1, २ 2, ३ 3, ४ 4, ५ 5, ६ 6, ७ 7, ८ 8, ९ 9, ० 0.

devanagari: or *nagari*, the type mostly but not solely used for printing Indian Sanskrit literature as well as works in the modern languages Bihari and Hindi.

Sanskrit. From 1200 BC or earlier, Classical Sanskrit was the language of kings, priests, and Hindu scripture, science, and philosophy. Its form was fixed by Panini's grammar, the 'Astadhyayi' (4th or 3rd century BC), a systematic analysis in 4,000 aphoristic rules (*Sutras*) based on earlier works. Sanskrit was not a 'dead' language; it absorbed words from other sources and remained a language of culture.

At the time of Panini Sanskrit was written in a syllabary known as *Ashokan Brahmi*. The concurrent and simpler vernacular *Prakrit* (i.e. unrefined) was used in several regional forms, but by the 5th century AD *Prakrit* was superseded in Northern India by Sanskrit for coins, inscriptions, and literature. The *nagari* script, used from about the 7th century, derived from Brahmi via Gupta and Siddhamatrkā scripts. It was and is written from left to right in a syllabary of 48 signs, 14 for initial vowel diphthongs and 34 for consonantal groups, all modified according to position in a word.

What may be the first published translation of a Sanskrit text into a European language was a Dutch version of Bhartrihari's 'Satakas' appended to Abraham Roger's 'De opendeure . . .', Leyden, 1651. In the late-18th and 19th centuries European studies in the Sanskrit language by Charles Wilkins and William Jones in Calcutta, followed by the von Schlegels and Franz Bopp in Germany, led to the extensive publication of grammars and texts (in or with translation) in Europe and India.

Hindustani. The modern *lingua franca* of Northern India has two literary forms: *Urdu*, used chiefly by Muslims, written and printed in the Persian-Arabic script, and *Hindi*, written and printed in *devanagari*, with simpler current hands for daily use (*Kaithi* and *Mahajani*).

The East India Company required its officials in both England and Calcutta to learn Indian languages. This called for books to study them. In London T. Cadell issued George Hadley's 'Grammatical remarks on . . . the Indostan language commonly called Moors' (i.e. Urdu) in 1772, and John Fergusson's 'Dictionary of the Hindostan language' in 1773. At that time, and until the early 19th century, the official language in British India was Persian. Sanskrit had no place in public life.

In Calcutta Dr Charles Wilkins set up a press for the Company in 1778 for printing works in oriental languages. (See also *Bengali printing and typography*) The first Persian literary work printed anywhere in India was published here in 1781. This was F. Balfour's edition of 'Inshā-i-Harkaran' printed with

type cut and cast by Wilkins. It was described by Balfour in the preface as ' . . . a perfect imitation of the Taleek . . .' although later critics considered 'neither the shapes of the letters nor the ligatures' were wholly satisfactory. Wilkins's type and copies of it were used by others in Calcutta.

The development of Urdu and Hindi prose in the early 19th century owed much to J. H. B. Gilchrist and his British and Indian colleagues at Fort William College, Calcutta. His own works, from the presses of several British printers active in the city, included a dictionary 1786–90; a grammar, 1796; and a 'Hindee story teller . . . in roman, persian and nagree characters', 1802. His edition of Aesop appeared in 1803 as 'Oriental fabulist . . . translated from English into Hindustani, Bongla and Sunkrit' (*sic*). He also encouraged local *pundits* to write, notably Sri Lal Lal whose 'Rajviti', 1809, and 'Prem Sagar', 1810, both printed in devanagari, were examples.

Lithography was used in 1827 for 'Anwari Sohili', a paraphrase in Persian by Hussein Kashify of Pilpay's Fables, Bombay Native Education Society; in 1830 at Cawnpore, in 1832 at Lucknow, and in 1837 at Delhi and Lahore. In 1840 the lithographic printing of Urdu newspapers began at Delhi and, being found less troublesome and costly than acquiring and setting type in persian-arabic, was soon adopted elsewhere. Even today the local-language newspapers of India and Pakistan are first written out by hand and then printed by lithography.

Historical note on devanagari type

1. *In India.* In addition to making type for bengali and persian-arabic Wilkins cut a fount of devanagari. A notable use of it was for William Jones's edition of Kalidasa's 'Ritusamhara' (The seasons), the first book ever printed in the Sanskrit language, Calcutta, 1792. In 1800 the nearby Serampore Press had Panchanan Karmakar's nagari type, used in 1804 for Carey's edition of the 'Hitopadesa'. In 1806 Manohar Karmakar completed a superior fount of 1,000 character combinations, used in 1808 for Colebrooke's edition of the Sanskrit dictionary Amara Sinha's 'Cosha, or dictionary of the Sungskrita language', for a New Testament in Sanskrit, and in 1811 for a Sanskrit Pentateuch.

There was also an Indian owned press in Calcutta capable of good work, that of Babu Ram, who published Colebrooke's Sanskrit dictionary of synonyms 'Hemacandra' in 1807.

2. *In Europe.* The earliest of several unsuccessful attempts to cut a fount of nagari was ordered by Maffeo Barberini (Pope Urban VIII, 1623–44) for the *Congregatio de Propaganda Fide*, q.v. It lay neglected for a century until Constantino Ruggieri, printer to the Congregatio, attempted with the help of Cassiano Beligatti to correct and complete it. The result appeared in Antonio Giorgi's 'Alphabetum

tibetanum', Rome, 1759. Beligatti later reworked the type, and his primary alphabet was shown in 'Alphabetum brammanicum . . .', edited by Amaduzzi, Rome, 1771. Although used to print translations of the Paternoster and Ave Maria the types were too simple for printing an original Sanskrit text.

The first Sanskrit grammar to be published anywhere was 'Sidharubam seu grammatica Sanscrdamica . . .', by Paulinus a Sancto Bartholomeo, 1790, followed in 1791 by his 'Alphabeta indica . . .', both printed by the Congregatio and showing the basic syllabary.

In London William Kirkpatrick of the East India Company commissioned the Jackson Foundry to cut a fount of devanagari for his projected Persian, Arabic, and English grammar and dictionary. The first part, issued in 1785, had no Sanskrit words, and the work was not completed. However, a Jackson specimen sheet of c. 1784 showed 'Deo Nagri' characters.

In 1786 Dr Charles Wilkins was obliged by ill-health to return to England. He made the first direct rendering into English of a Sanskrit text: this was the 3rd century AD Vaishnava creed, the 'Bhagavad-Gita', London, 1785, and the Company paid for publication. He followed it with a translation of the 'Hitopadesa', Bath, 1787. At his house in Bath he worked on a fount of devanagari type. In the preface to his Sanskrit grammar, which he began printing in 1795, Wilkins writes that he 'cut letters in steel, made matrices and moulds and cast from them a fount of type of the devanagari character all with my own hands'. Before the book was finished fire destroyed his workshop, though the punches were saved. Ten years later the Company persuaded him to resume work. His was the first fount of nagari type in Europe of which systematic use could be made. The Caslon foundry cast it in commercial quantities in English (14-point) size. It was used for Wilkins's 'Grammar of the Sanskrita language', London, Bulmer, 1808; for Alexander Hamilton's edition of the 'Hitopadesa', 1810; and also for Bopp's 'Nalus, Maha-Bharata episodium', 1819. Although this type is now of only historical interest it was the sole fount available in Europe until 1821. Thus in Germany, as an alternative to buying it, Othmar Frank's 'Chrestomathia Sanskrita . . .', Munich, 1821/2, was one of several works printed by lithography. After setting the non-Indian portions of the text in roman type a pull was taken. The Sanskrit words called for were then entered by hand in spaces left on the printed sheet and the whole was transferred to stone.

In France, following the acquisition of the Pons collection of Sanskrit MSS in 1729, the Royal Library in Paris became Europe's main centre of Sanskrit studies. It was here, in 1820, that August Wilhelm von Schlegel, professor of Sanskrit at the Bonn Academia Rhenana, commissioned a fount of nagari

type. The result was Vibert's excellent 20-point size of 1821, first shown in a pamphlet 'Specimen novae typographiae Indicae . . . litterarum figuras ad elegantissimorum codicum Bibliothecae Regiae Parisiensis exemplaria delineavit . . . Aug. Guil. Schlegel . . . Lutetiae Parisiorum ex officina Georgii Crapelet, MDCCCXXI'. Vibert cut the punches and J-B Lion Lettern cast the type. Schlegel gave Europe the first nagari type to remain in use until the present day, personally setting the type for his edition of the 'Bhagavad-Gita', Bonn, 1823. In 1825 Delafond of Paris cut a 16-point size.

At Bopp's instigation the Akademie der Wissenschaft in Berlin acquired Schlegel's matrices and equipment for its newly established oriental printing office in 1821. Here Bopp supervised the cutting of a smaller fount of nagari to be used for textual notes. They were used in Bopp's edition of 'Ardschuna's Reise zu Indra's Himmel . . .', Berlin, 1824. In 1825 the Société Asiatique in Paris bought the Schlegel and Bopp founts, using them in Antoine Chézy's Sanskrit/French edition of the 'Sakuntala', Dondey-Dupré, 1830. By mid-century the founts were acquired by Brill of Leyden who issued a specimen 'De Sanskrit Drukletters' in 1851. Thus Schlegel's type spread through Europe. The Vibert and Delafond punches are now in the *Cabinet des Poinçons*, q.v.

In the present century founts of nagari have been made for hotmetal composition and photosetting. Some years ago *Adrian Frutiger*, q.v., was invited by the Indian National Institute of Design to visit India. There he sought to establish the fundamental shapes of devanagari and recommend simplifications which would further the spread of literacy. As a result Frutiger, in collaboration with Mahendra Patel, designed a devanagari type for Monotype.

For a specimen see Appendix A.

Devanagari Bold

Monotype 1965. 14 pt

सन् १८६७ में इंग्लैंड में एक नयी मशीन का अधिक सफल माडेल आया । इसमें अभी और उन्नति होनी थी । सब से पहिले अमेरिका के अनुसंधानक टालबर्ट लैन्स्टन को इसके बारे में सूझी । उन्होंने इसे छिद्रयुक्त रिबन के कागज में गुंथी एक ठंढी

Elementa Brahm, Tang. Mungalica.

I. DEVANAGRAM.

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ऋँ ऌँ अः आः इः ईः उः ऊः ऋः ॠः ऌः ॡः
ā ā i ī ū rī rī lā lā ie ei o au am ahā kā kā gā gā

ग्न घ्न ङ्न ञ्न ट्ठ ड्ढ त्त प्र द्द ङ्ग न्न प्प व्व
gna fchā fchā dsā dsā gnā ta ta tta thā na ta tā da da na pā pā bā bā

ज्ज ञ्ज ल्ल व्व रा र्ण स्हल्ल र्ण र्ण इति
ma ja ra la wa fcha fcha fa ha la ttza ra i tibi

226 Elementa Brahm, Tang. Mung. I. Devanagr.

II. BALABANDU.

ऊ न्ना सीथं अ आ इ ई उ ऊ वी वी ली ली ये ये ऐं औं
wo na ma si tham A ā i ī ū rī ri li li ie ei o aū am

अः क ख वा घ ङ च छ ज्ञ झ ञ ट्ठ ड्ढ ङ्ग त्थ द्द
ahā kae kae gae gae nhæ tze tze fē fē je thæ thæ dæ dæ næ tæ dæ dæ

ध्न प्प क्क ब्ब ङ्ग म्म य् य ल्ल व्व श्श ष्ष ह्ह र्ण
dæ næ pæ bæ bæ bæ mæ ie ræ læ wæ fæ fchæ fchæ bæ læ itifchæ

III. Akar

Elem. Brahm, Tang. Mungal. II. Balabandu. 227

ॐ न ञ ङी षः श ञा ङि ङी कु कु रि ङी लि नी ई ई अं अं ञ

I 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20

घः क ष ञ न ङः व ह ष ष नः ट ठ द ठ याः त ष द घ

21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40

नः प फ व ञ नः य ड न वः स ष अ हः ल ष

41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56

प पा पि पी पु पृ षं पै पे पौ प प प्र प्रा प्री प्री पु

Etc. 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 &c.

Elementa Litteraturæ Brahmanicæ, Tan-
gitane & Mungalicæ.

Oben diesen hat Herr T. S. Bayer, weyland Prof. ling. Orient. in Petersburg, in Comment. Scient. Acad. Imp. Petr. T. III. p. 389. wie auch in Tom. IV. p. 289. 291. & 292. Nachricht ertheilet; Und hält davor, daß die Brahmanische Sprache als eine von denen alten orientalischen Sprachen, welche in Indien gebräuchlich gewesen, anzusehen sey. Ob sie haben zwar, meldet er, annoch die Sanguitanische und Mungalische, aber er bleibt dennoch dabei, daß solche von der Brahmanischen herrühre; Ob er aber diese Brahmanen gewesen seyn, wollen wir hier mit Stillschweigen übergehen, indem der dritte Iamus solches satzsam erweiset. Ich will nur einige Buchstaben und Zeichen daraus entlehnen, und zugleich deren Zusprache mittheilen.

Nota: Die Ziffer, so man bey der Zusprache jeden Buchstaben bemercket, weist ober zeigt durch eben die Nummer den Buchstaben in der Tabelle des Alphabeths an.

Don der Zusprache.

- 1) O, föhmt mit unserm alten Vocali genau überein, vide 18. nr.
- 2) n, n vide 40. "
- 3) m, m siehe 44. "
- 4) s, s, s, vide 49. " & 51. "
- 5) h, h, h, von dem ist zu merken, daß das d ganz apart auß gesprochen werden, und das h nicht stark ausgesprochen: ein endiget sich als wenn man ein n ganz leise hört: vide 39. "
- 6) Um folgen die Vocales; und wollen also setzen, wie selbige bey uns sein.
- 7) a, ist kurz.

9) 2 7) 2

Christian Friedrich Geßner: Der in der Buchdruckerei wohl unterrichtete Lehr-Junge, Oder: bey der löblichen Buchdruckerkunst nöthige und nützliche Anfangsgründe, Leipzig 1743, pp. 226-229

A
GRAMMAR
OF THE
SANSKRITA LANGUAGE

BY
CHARLES WILKINS, LL.D. F. R. S.

अयुक्तं यदिह प्रोक्तं प्रमादेन भ्रमेन वा ।
वाचा मया दयावन्तः सन्त संशोधयन्तु तन् ॥

LONDON:

PRINTED FOR THE AUTHOR,
BY W. BULMER AND CO. CLEVELAND-ROW, ST. JAMES'S;
AND SOLD BY BLACK, PARRY, AND KINGSBURY, BOOKSELLERS TO THE
HONOURABLE THE EAST INDIA COMPANY, LEADENHALL-STREET.

1808.

*Charles Wilkins: „A Grammar of the Sanskrita Language“, London 1808
(On above page and on the following two pages, Devanagari was typeset by foundry type)*

अ इ उ ऋ लृ ए ऐ ओ औ

a, i, u, ri, li; ē, ai, ō, au;

ह य व र ल अ ण न उ म झ ढ ध घ भ
ha, ya, va, ra, la; ṅa, ṇa, na, nga, ma; jha, ḍha, dha, gha, bha;

ज ड द ग ब ख फ छ ठ थ च ट न क प
ja, ḍa, da, ga, ba; kha pha, ch'ha, tha, tha; cha, ṭa, ta, ka, pa;

श ष स

ṣa, sha, sa,

ANY two of the above letters, from first to last, being read together, form a sort of *term* indicative of all the characters they may chance to embrace. Thus the vowel अ *a* being read with the consonant ब *b*, is formed the class अब् *ab*; under which term is included every letter from अ *a* to ब *b*, namely, अ इ उ ऋ लृ; ए ऐ ओ औ; ह य व र ल; अ ण न उ म; झ ढ ध घ भ; ज ड द ग ब. In like manner the term चप् denotes the class च ट न क प; the term झम् implies the class झ ढ ध घ भ; and by the term जब् is indicated the class ज ड द ग ब. By the term हम् is to be understood all the consonants, or, indefinitely, a consonant. In the same manner other terms and classes are to be formed, as occasion requires.

THE alphabet is also, by some philologists, divided into two grand species of letters, which may with propriety be called *Surds* and *Sonants*. The term *surd* is applicable to such letters as, in the first effort to form them, admit of no vocal sound; and the term *sonant*, to such letters as are attended by an audible murmuring, as it were, of the voice. The *surds* are the two first letters of each of the five classes of consonants, with the

१

अजरामरवत् प्राज्ञो विद्यामर्थं च चिन्तयेत् १
ajarāmaravat prājñō vidyām arthāncha chintayēt

गृहीत इव केशेषु मृत्युना धर्ममाचरेत् ॥
grihīta iva kēśēshu mṛityunā dharmam ācharēt

२

विद्या ददाति विनयं विनयाद्याति पात्रतां १
vidyā dadāti vinayam vinayād yāti pātratām

पात्रत्वाद्भनमाप्नोति धनाद्भमस्तितः सुखं ॥
pātratwād dhanam āpnōti dhanād dharmas tatah sukham

३

सर्वद्रव्येषु विद्यैव वित्तमाहुरनुत्तमं १
sarva dravyēshu vidyaiva vittam āhur anuttamam

अहार्यत्वाद्नर्घ्यत्वात् अक्षयत्वाच्च सर्वदा ॥
ahāryatwād anarghyatwāt akshayatwāch cha sarvadā

४

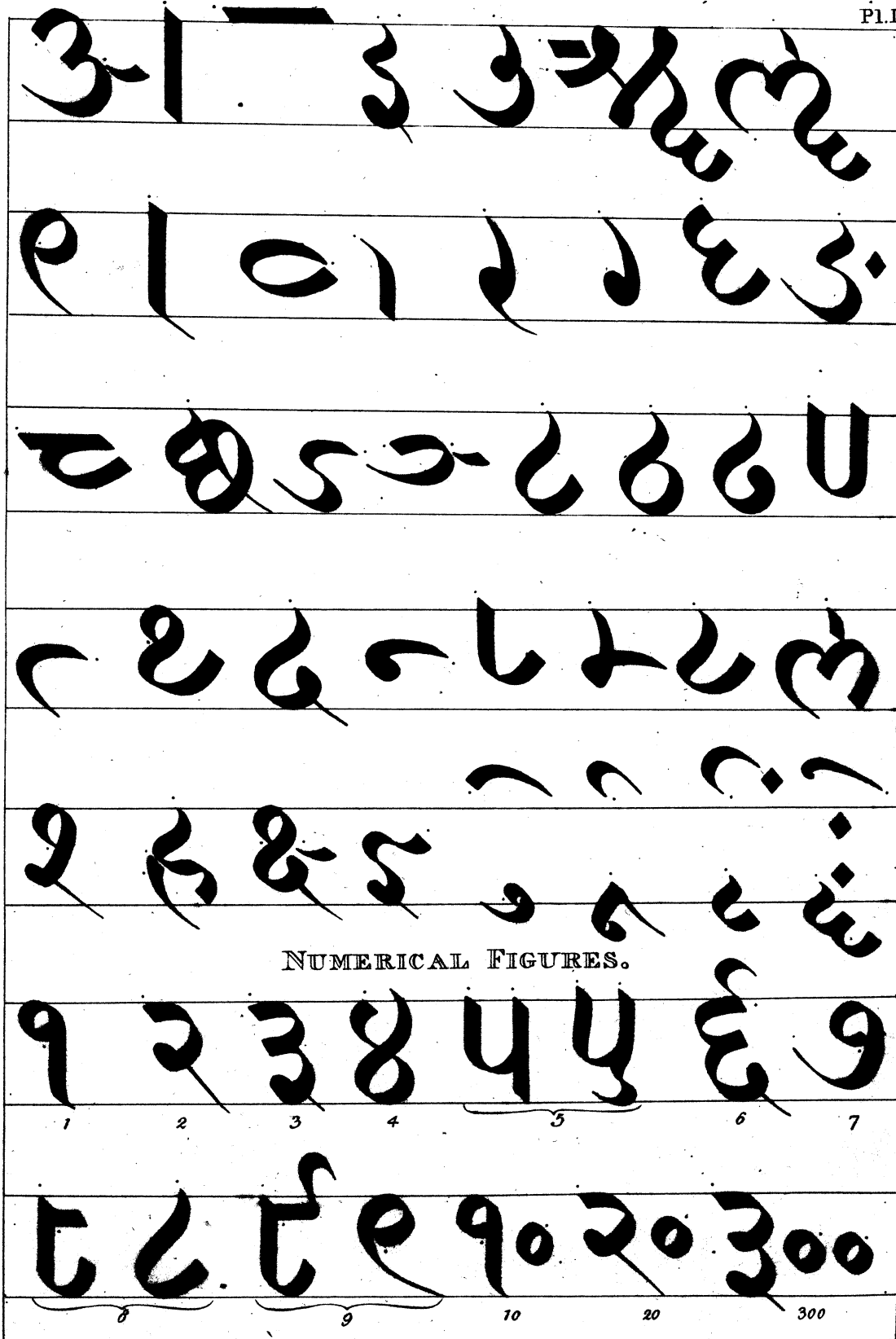
संगं नयति विद्यैव नीचगापि नरं सरित् १
sangam nayati vidyaiva nīchagāpi naram sarit

समुद्रमिव दुर्धर्षम् नृपं भाग्यमतः परं ॥
samudramiva durdharsham nṛipam bhāgyamatah param.

TRANS-

THE ELEMENTS
OF THE DEVANAGARI CHARACTER.

PL. I.



NUMERICAL FIGURES.

C. Wilkins, I.L.D., F.R.S., script. The dots show the beginning. Engraved by J. Swaine.

Charles Wilkins: „A Grammar of the Sanskrita Language“, London 1808
(On above page and on the following three pages, Devanagari was engraved on copperplate)

THE DEVANAGARI ALPHABET.

Vowels.

Consonants.

Pl. II.

Initials.		Finals							
अ _ă	आ _ā	ã	ā	क _k	ख _{kh}	ग _g	घ _{gh}	ङ _{ng}	
इ _ĩ	ई _ī	ि _ĩ	ी _ī	च _{ch}	छ _{chh}	ज _j	झ _{jh}	ञ _ñ	
उ _ũ	ऊ _ū	ु _ũ	ू _ū	ट _t	ठ _{th}	ड _d	ढ _{dh}	ण _n	
शृ _ř	शृ _ř	ृ _ř	ृ _ř	त _t	थ _{th}	द _d	ध _{dh}	न _n	
लृ _{lĩ}	लृ _{lĩ}	लृ _{lĩ}	लृ _{lĩ}	प _p	फ _{ph}	ब _b	भ _{bh}	म _m	
ए _ē	ऐ _{ai}	ै _ē	ै _{ai}	य _y	र _r	ल _l	व _{v & w}		
ओ _ō	औ _{au}	ो _ō	ौ _{au}	श _s	ष _{sh}	स _s	ह _h	ळ _{ll}	

Initials and Final Vowels with a Consonant.

अक आका इकि ईकी उकु उक् शृक

शृक लृक लृक एके ऐकै ओको औको

Other Forms.

अ आ ऊ शृ ए ऐ ओ औ ओ औ ङ ङ

ण न भ भ ल श ष

COMPOUND CONSONANTS.

Double Letters.

PL. III

कक	क्क	कख	क्क	क्क	क्क	क्क	क्क	क्क	क्क
kk	kkh	kch	kch'h	kt	kth	kn	kn	kn	kn
कफ	कन	कय	क्क	क्क	क्क	क्क	क्क	क्क	क्क
kph	kn	ky	kr	kl	kw	ks	ksh	khn	khn
कम	क्य	कख	कख	कख	कख	कख	कख	कख	कख
khm	khy	khr	khw	khs	khs	gg	ggh	gj	gj
कग	कग	कग	कग	कग	कग	कग	कग	कग	कग
gjh	gd	gdh	gn	gb	gbh	gm	gy	gr	gl
कघ	कघ	कघ	कघ	कघ	कघ	कघ	कघ	कघ	कघ
ghn	ghm	ghy	ghr	ghl	ghw	ngk	ngg	nggh	ngng
कङ	कङ	कङ	कङ	कङ	कङ	कङ	कङ	कङ	कङ
chh	chch'h	chm	chy	chr	chw	ch'hm	ch'hy	ch'hr	ch'hr
कञ	कञ	कञ	कञ	कञ	कञ	कञ	कञ	कञ	कञ
chhl	ch'hw	jj	jjh	jn	jn	jm	jj	jr	jl
कट	कट	कट	कट	कट	कट	कट	कट	कट	कट
nj	nch	nch'h	njh	nn	tt	tth	tm	ty	tr
कड	कड	कड	कड	कड	कड	कड	कड	कड	कड
dg	dgh	dd	dn	dbh	dm	dy	dr	dl	dw
कण	कण	कण	कण	कण	कण	कण	कण	कण	कण
dhm	dhy	dhr	nt	nth	nd				
कण	कण	कण	कण	कण	कण	कण	कण	कण	कण
ndh	nn	nh	tk	tkh	tt	tth	tn	tn	tn
कण	कण	कण	कण	कण	कण	कण	कण	कण	कण
ty	tr	tw	ts	thn	thm	thy	thw	dg	dgh

C. Wilkins, LL.D. F.R.S. Script.

Engraved by J. Swaine.

COMPOUND CONSONANTS.

Double Letters Continued.

Pl. IV.

द	द	द	द	म	य	द	द	ध	ध	ध	ध
dd	ddh	dn	dbd	dm	dy	dr	dw	āhn	dhm	dhy	dhr
ध	न्	न्	न्	न्	न्	न्	न्	न्	न्	न्	न्
dhw	nk	nch	nt	nth	nd	nn	ndh	nr	nph	nm	
न	न्	न्	न्	न्	न्	न्	न्	न्	न्	न्	न्
ny	nr	nw	ns	nh	nt	nn	np	nm	ny	nr	
प	प	फ	फ	फ	फ	ब	ब	ब	ब	ब	ब
pl	pw	ps	phm	phy	phw	bg	bj	bd	bdh	bn	
ब	भ	भ	भ	भ	भ	भ	भ	भ	भ	भ	भ
bn	bbh	bm	by	br	bl	bw	bhn	bhm	bhy	bhr	
भ	भ	म	म	म	म	म	म	म	म	म	म
bhl	bhw	mn	mp	mph	mb	mbh	mm	my	mr	ml	
म	व	र्	र्व	र्	ल	ल	ल	ल	ल	ल	ल
mw	rk	rkh	rg&c ^a	lk	lg	lt	lp	ly	ll		
श्	श्	श्	श्	श्	श्	श्	श्	श्	श्	श्	श्
sch	schh	sm	sy	sr	sl	sw	ss	shk	shkh		
ष	ष	षा	ष	ष	ष	ष	ष	ष	ष	ष	ष
sh	shh	shn	shp	shph	shm	shy	shw	shsh	sk		
स्	स्	स्	स्	स्	स्	स्	स्	स्	स्	स्	स्
skh	st	sth	sn	sp	sph	sm	sy	sr	sl		
स्	स्	स्	स्	स्	स्	स्	स्	स्	स्	स्	स्
sw	ss	hn	hm	hy	hr	hl	iti	subham	bhūyāt.		

C. Wilkins, L.I.D. F.R.S. Script.

Engraved by J. Swaine.

क्क्य क्य क्त्य त्त्य क्क्त्त क्त्य क्त्य क्त्य क्त्य
kky kty ktr ktry ktw

क्त्य क्त्य क्षण क्षण्य क्ष्म क्ष्म्य क्ष्य क्ष्र क्ष्व
kny kshn kshry kshn kshmy kshy kshr kshw

क्षल ग्द्व ग्य ग्य ग्द्य ग्ध्व ग्न्य ग्न्य ग्न्य ग्न्य
kshl gddh gjy gdy gdhy gdhw gny gbhy gny gry

घ्य च्य च्च्य च्च्य च्च्य च्च्य ज्य ज्व ज्य ज्य
ghry chry chchy chchy chchy chchy jyj jjw jny

ञ्च्य च्च्य ज्य ज्य ञ्य ञ्य ञ्य ञ्य ञ्य ञ्य ञ्य
ñchhñ chchy jny dbhy ndy ndr ndw nny nthy nhm

ण्य ण्य ल्य ल्य ल्य ल्य ल्य ल्य ल्य ल्य ल्य ल्य
ny nhw lky lkr lty ltr ltry tlw lny lny

त्र्य ल्य ल्य ल्य ल्य ल्य ल्य ल्य ल्य ल्य ल्य ल्य
try tsth tsn tsny tsm tsy tsr tsw dgr ddr

ड्य ड्य ड्य ड्य ड्य ड्य ड्य ड्य ड्य ड्य ड्य ड्य
dbhy dbhr dmy dry dvy dvr dhry nty ntr ntry ntw

न्त्य न्त्य न्त्य न्त्य न्त्य न्त्य न्त्य न्त्य न्त्य न्त्य
ntvy nts ntsy ntw nthy nthw ndy ndr ndw

न्ध्य न्ध्व न्ध्व न्ध्व न्ध्व न्ध्व न्ध्व न्ध्व न्ध्व न्ध्व
ndhm ndhy ndhw nmy nmr nry nly nsth nsm nsy

न्म्य म्म्य म्म्य म्म्य म्म्य म्म्य म्म्य म्म्य म्म्य म्म्य
mny mpsy mby mbhy lgy lpl lpty lpsm shthy

ष्य स्व्य ल्य ल्य ल्य ल्य ल्य ल्य ल्य ल्य ल्य ल्य
shny sky sty stry stw sphy svy hny